विज्ञान पत्रिका के संपादक के इस्तीफे का रोचक किस्सा

एक विज्ञान पत्रिका *दि ओपन इन्फॉर्मेशन साइन्स जर्नल* के संपादक ने फैसला किया है कि वे अपने पद से इस्तीफा दे देंगे क्योंकि पत्रिका के प्रकाशक ने उनकी जानकारी के बगैर ही एक शोध पत्र प्रकाशित किया है। और यह शोध पत्र भी सीधा-सच्चा नहीं बल्कि एक धोखाधड़ी था।

नेचर के ऑनलाइन संस्करण में प्रकाशित किस्सा कुछ इस तरह है। कॉर्नेल विश्वविद्यालय के एक स्नातक छात्र फिलिप डेविस और *दि न्यू इंग्लैण्ड जर्नल ऑफ मेडिसिन* के केंट एण्डर्सन ने एक शोध पत्रिका में अपना शोध पत्र प्रकाशन के लिए भेजा था। यह शोध पत्र एक कंप्यूटर सॉफ्टवेयर द्वारा तैयार किया गया था जो व्याकरण के लिहाज़ से सही, मगर अन्यथा निरर्थक पाठ्य वस्तु तैयार कर देता है। इन लोगों ने ऐसा एक शोध पत्र छद्म नाम से भेज दिया।

डेविस का कहना है कि उसे उक्त पत्रिका से कई बार शोध पत्र भेजने का निमंत्रण मिला था, इसलिए उसने ऐसा किया। यह पत्रिका बेंथम प्रकाशन द्वारा प्रकाशित की जाती है और इसकी नीति है कि इसमें प्रकाशन हेतु लेखक भुगतान करते हैं। डेविस देखना चाहते थे कि क्या प्रकाशक एकदम निरर्थक पांडुलिपि को प्रकाशन के लिए स्वीकार कर लेगा। तो उसने यह बेमानी शोध पत्र तैयार करके प्रकाशनार्थ भेज दिया।

डेविस को जून में बताया गया कि उसका शोध पत्र स्वीकार कर लिया गया है और वह इसके लिए पत्रिका को 800 डॉलर का भुगतान कर दे। इसी बीच डेविस ने उसी प्रकाशक बेंथम द्वारा प्रकाशित एक अन्य पत्रिका *दि ओपन सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग जर्नल* को भी एक पर्चा भेज दिया। यह पर्चा अस्वीकार हो गया।

दि ओपन इन्फॉर्मेशन साइन्स के प्रमुख संपादक बम्बांग पारमेंटो का कहना है कि उन्होंने उक्त पर्चे की पांडुलिपि देखी तक नहीं है और न ही उन्होंने इसके समीक्षकों की टिप्पणियां देखी हैं। उन्हें तो बस इतना बताया गया था कि इसे स्वीकार कर लिया गया है। वह भी तब जब डेविस और एण्डर्सन ने यह पूरी धोखाधड़ी व अपना मकसद सार्वजनिक कर दिया था। तब जाकर संपादक ने प्रकाशकों से संपर्क किया और उन्हें इस पर्चे की स्वीकृति की सूचना दी गई। अब उन्होंने इस्तीफा देने का मन बना लिया है। मगर बेंथम के निदेशक का कहना है कि गलती तो डेविस की है जिसने यह जाली पर्चा भेजा और इसकी निंदा की जानी चाहिए।

इस मामले में विवाद जारी है मगर एक बात तय है कि इस तरह की घटनाएं विज्ञान प्रकाशनों पर और खास तौर से भुगतान के आधार पर प्रकाशन पर शक पैदा करने का काम करेंगी। ***(स्रोत फीचर्स)***